6 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

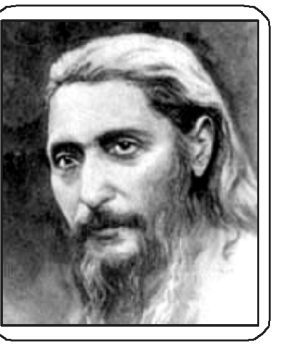

स्वच्छन्दतावादी भावधारा के कवियों में सर्वाधिक अनोखे व्यक्तित्व की गरिमा से मण्डित कविवर निराला का जन्म बंगाल के महिषादल राज्य के मेदिनीपुर जिले में सन् 1897 ई० में हुआ था। इनके पिता पं० रामसहाय त्रिपाठी उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत जिला उन्नाव में स्थित गढ़ाकोला ग्राम के निवासी थे और महिषादल राज्य में जाकर राजकीय सेवा में कार्य कर रहे थे। जब निरालाजी छोटे ही थे तभी इनके माता-पिता का असामयिक निधन हो गया। युवा होने पर साहित्यिक अभिरुचि से सम्पन्न मनोहरा देवी से इनका विवाह हुआ। लेकिन वे भी शीघ्र ही इनमें साहित्यिक संस्कार जगाकर एक पुत्र और पुत्री का भार इनके ऊपर छोड़कर इस संसार से विदा हो गयीं। पुत्री सरोज जब बड़ी हुई तो इन्होंने उसका विवाह किया, लेकिन थोड़े ही दिनों में उसने भी आँखें मूँद लीं। निरालाजी अपनी इस विवाहिता पुत्री के निधन से अत्यधिक विक्षुब्ध हो उठे। मन के इस विक्षोभ को इन्होंने अपनी रचना 'सरोज-स्मृति' में वाणी दी।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1897 ई०।
- **जन्म-स्थान**–मेदिनीपुर (पश्चिम बंगाल)।
- **पिता**—रामसहाय त्रिपाठी।
- **पत्नी**—मनोहरा देवी।
- **प्रमुख रचनाएँ**—परिमल, अनामिका, गीतिका, चतुरी चमार, बिल्लेसुर बकरिहा।
- **लेखन विधा :** कविता, उपन्यास, कहानी, निबन्ध।
- **भाषा :** संस्कृतनिष्ठ, खड़ी बोली।
- **शैली** : सरल और मुहावरेदार।
- **मृत्यु**—सन् 1961 ई०।

निरालाजी ने प्रारम्भ में अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए महिषादल राज्य में नौकरी की। किन्तु अपने स्वाभिमान से परिपूर्ण व्यक्तित्व के कारण उस सामन्ती वातावरण से ये सामंजस्य नहीं स्थापित कर सके। फलस्वरूप यहाँ से अलग होकर इन्होंने कलकत्ता में अपनी रुचि के अनुरूप रामकृष्ण मिशन के पत्र **'समन्वय'** का सम्पादन-भार सँभाला। उसके बाद **'मतवाला'** के सम्पादक मण्डल में सम्मिलित हुए। तीन वर्ष बाद लखनऊ आकर **'गंगा पुस्तकमाला'** का सम्पादन करने लगे तथा **'सुधा'** के सम्पादकीय लिखने लगे। फक्कड़ और अक्खड़ स्वभाव के कारण यहाँ भी इनकी नहीं निभी और लखनऊ छोड़कर ये इलाहाबाद में रहने लगे। आर्थिक विपन्नता भोगते हुए इन्होंने जनसाधारण के साथ अपने को एकात्म कर दिया और प्रगतिशील काव्य-रचनाओं के साथ बड़ी प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ **'चतुरी चमार', 'बिल्लेसुर बकरिहा'** आदि प्रस्तुत कीं। निरालाजी ने स्वच्छन्दतावादी विचारधारा को लेकर भी अनेक उपन्यास 'प्रभावती', 'निरुपमा' तथा कहानियाँ लिखी थीं। सन् 1961 ई० में प्रयाग में इनका निधन हुआ।

आधुनिक चेतना के विद्रोहशील स्वरूप की सर्वाधिक और सबसे समर्थ अभिव्यक्ति निरालाजी के काव्य में है। बंगभूमि में जन्म होने के कारण बँगला भाषा और उसके आधुनिक चेतना से ओत-प्रोत साहित्य का इन्हें भली प्रकार अध्ययन-अनुशीलन का अवसर मिला। बंगाल के धार्मिक महापुरुषों—रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द आदि ने भी इन्हें प्रभावित किया।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ की काव्य-प्रतिभा का अभिनन्दन करते हुए इन्होंने अपने प्रारम्भिक रचनाकाल में 'रवीन्द्र कविता कानन' की रचना की। किन्तु इनका व्यक्तित्व स्वयं महाप्राण था, इसलिए ये सभी प्रभाव इनके भीतर पूर्णतः समाहित हो गये। निरालाजी की मातृभाषा हिन्दी थी और उसके प्रति इनके मन में पर्याप्त अनुराग था, इसलिए 'सरस्वती', 'मर्यादा' आदि पत्रिकाओं के गम्भीर अध्ययन के माध्यम से बँगला-भाषियों के बीच रहते हुए भी इन्होंने हिन्दी का अभ्यास किया और हिन्दी में ही साहित्य का सृजन आरम्भ किया।

निरालाजी ने अपने विद्रोहशील व्यक्तित्व को लेकर मन के प्रबल भावावेग को जब वाणी दी तो छन्द के बन्धन सहज ही विच्छिन्न हो गये और मुक्तछन्द का आविर्भाव हुआ। कविता का यह स्वच्छन्द स्वरूप इनकी प्रथम रचना '**जुही की कली**' से ही द्रष्टव्य है। साहित्य का स्वच्छन्दतावादी संविधान निरालाजी की रचनाओं में ही सबसे सशक्त रूप में प्रकट हुआ है। स्वच्छन्दतावाद या छायावाद की मूलभूत प्रवृत्ति आत्मानुभूति के आन्तरिक स्पर्श से अलंकृत भाषा में अभिव्यक्त है, जो मुक्तछन्द के अतिरिक्त कभी-कभी गीत रूप भी ग्रहण करती है।

निरालाजी के मुख्य काव्य-ग्रन्थ हैं—'**अनामिका**', '**परिमल**', '**गीतिका**'। '**अनामिका**' में उत्कृष्ट छायावादी कविताएँ संग्रहीत हैं। इनकी अत्यधिक समर्थ काव्य-रचना 'राम की शक्ति-पूजा' और शोक-गीत 'सरोज-स्मृति' इसी संग्रह में हैं। '**गीतिका**' मुख्यतः शृंगारिक रचना है। साथ ही इसमें राष्ट्रप्रेम और प्रकृति-चित्रण के भी दर्शन होते हैं। निरालाजी की स्वच्छन्दतावादी काव्यकला का प्रमुख स्वरूप इनके '**परिमल**' काव्य-संग्रह की रचनाओं में दृष्टिगत होता है। इसमें हमें सौन्दर्य चेतना के मानवीय, प्रकृतिपरक और आध्यात्मिक सभी रूप देखने को मिल जाते हैं। अतीत के भी भावना और कल्पना से अनुरंजित अनेक भव्य और प्रेरणाप्रद चित्र हैं। इनके अतिरिक्त निराला जी की अन्य प्रमुख काव्य-रचनाएँ हैं—'**तुलसीदास**', '**कुकुरमुत्ता**', '**अणिमा**', '**नये पत्ते**', '**बेला**', '**अर्चना**', '**आराधना**' आदि। इनका सहज संवेदनशील हृदय समाज के अनेक पीड़ितों और प्रपीड़ितों के प्रति सहानुभूति से परिपूर्ण हो उठा है। इसी अनुभूति को लेकर इनका विद्रोही मन सजग हो उठा है और बड़ी ओजस्वी शब्दावली में व्यक्ति, समाज और सम्पूर्ण देश को विप्लव के लिए आह्वान करने लगा है।

निराला की भाषा को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है—(1) प्रौढ़, सशक्त एवं ओजस्वी भाषा, (2) माधुर्यपूर्ण, सौष्ठवमयी भाषा, (3) सरल, सुबोध एवं व्यावहारिक भाषा, (4) बोलचाल की चलती भाषा। निराला जी ने स्पष्ट लिखा है कि *"हम किसी भाव को जल्दी और आसानी से तभी व्यक्त कर सकेंगे, जब भाषा पूर्ण स्वतन्त्र और भावों की सच्ची अनुगामिनी होगी।"*

निराला जी 'यथा नाम तथा गुण' के सबल प्रमाण थे। निराले व्यक्तित्व के कारण इन्हें सैकड़ों में सरलता से पहचाना जा सकता था। जिस ओर भी इनकी निराली लेखनी चली, उधर से ही विजयिनी होकर लौटी। इन्होंने अपने निराले व्यक्तित्व से हिन्दी साहित्य जगत् को निराला पथ दिखाया, निराला रूप दिया, निराली दिशा दी और निराली वाणी प्रदान की। हिन्दी साहित्य संसार अपनी निराली विभूति को कभी विस्मृत न कर सकेगा।

बादल-राग

[प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ निराला जी द्वारा रचित 'परिमल' से अवतरित हैं।' कवि ने इन पंक्तियों में बादलों का आह्वान करके उनसे सृष्टि में नवीन शक्ति का संचार करने की प्रार्थना की है।]

झूम-झूम मृदु गरज-गरज घन घोर!
राग-अमर! अम्बर में भर निज रोर!
झर झर झर निर्झर-गिरि-सर में,
घर, मरु तरु-मर्मर, सागर में,
सरित-तड़ित-गति-चकित पवन में,
मन में, विजन-गहन-कानन में,
आनन-आनन में, रव घोर कठोर—
राग-अमर! अम्बर में भर निज रोर!
अरे वर्ष के हर्ष!
बरस तू बरस-बरस रसधार!
पार ले चल तू मुझको
बहा, दिखा मुझको भी निज
गर्जन-भैरव-संसार!
उथल-पुथल कर हृदय—
मचा हलचल-
चल रे चल-
मेरे पागल बादल!
धँसता दलदल,
हँसता है नद खल, खल,
बहता, कहता कुलकुल कलकल कलकल।
देख-देख नाचता हृदय
बहने को महा विकल बेकल,
इस मरोर से—इसी शोर से—
सघन घोर गुरु गहन रोर से।
मुझे गगन का दिखा सघन वह छोर!
राग अमर! अम्बर में भर निज रोर! **('परिमल' से)**

सन्ध्या-सुन्दरी

[प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों में कवि ने 'सन्ध्या' का मानवीकरण करते हुए सन्ध्यारूपी सुन्दरी के आकाश से उतरकर पृथ्वी पर छा जाने का बिम्ब प्रस्तुत किया है।]

दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सन्ध्या-सुंदरी परी-सी

धीरे धीरे धीरे।
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,
मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर,
किन्तु जरा गंभीर, नहीं है उनमें हास-विलास।
हँसता है तो केवल तारा एक
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से
हृदयराज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।
अलसता की-सी लता
किन्तु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह,
छाँह सी अम्बर-पथ से चली।
नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप
नूपुरों में भी रुनझुन-रुनझुन नहीं,
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द सा 'चुप, चुप, चुप'
है गूँज रहा सब कहीं—
व्योम-मंडल में जगती तल में—
सोती शान्त सरोवर पर उस अमल-कमलिनी-दल में—
सौन्दर्य-गर्विता सरिता के अति विस्तृत वक्षःस्थल में—
धीर वीर गम्भीर शिखर पर हिमगिरि-अटल-अचल में—
उत्ताल-तरंगाघात-प्रलय-घन-गर्जन-जलधि प्रबल में—
क्षिति में—जल में—नभ में—अनिल-अनल में—
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द सा, 'चुप, चुप, चुप'
है गूँज रहा सब कहीं—
और क्या है? कुछ नहीं।
मदिरा की वह नदी बहाती आती,
थके हुए जीवों को वह सस्नेह
प्याला एक पिलाती,
सुलाती उन्हें अंक पर अपने,
दिखलाती फिर विस्मृति के अगणित मीठे सपने,
अर्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,
कवि का बढ़ जाता अनुराग,
विरहाकुल कमनीय कंठ से
आप निकल पड़ता तब एक विहाग।

अभ्यास प्रश्न

पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(बादल-राग)

(क) अरे वर्ष के हर्ष!
बरस तू बरस-बरस रसधार!
पार ले चल तू मुझको
बहा, दिखा मुझको भी निज
गर्जन-भैरव-संसार!
उथल-पुथल कर हृदय—
मचा हलचल-
चल रे चल-
मेरे पागल बादल!
धँसता दलदल,
हँसता है नद खल, खल,
बहता, कहता कुलकुल कलकल कलकल।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) कल-कल ध्वनि से कौन प्रवाहित हो रही है?
(iii) इस पद्यांश में कवि ने किसका चित्रण किया है?
(iv) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने बादलों का आह्वान करके किसकी प्रार्थना की है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(ख) झूम-झूम मृदु गरज-गरज घन घोर
राग-अमर! अम्बर में भर निज रोर।
झर झर झर निर्झर-गिरि-सर में,
घर, मरु तरु-मर्मर सागर में,
सरित-तड़ित-गति-चकित पवन में
मन में, विजन-गहन-कानन में
आनन-आनन में, रव घोर कठोर-
राग-अमर! अम्बर में भर निज रोर! **[2019 CM]**

प्रश्न– (i) प्रस्तुत पद्यांश का शीर्षक व रचनाकार के नाम का उल्लेख कीजिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) 'अम्बर में भर निज रोर' किससे कहा गया है?
(iv) 'अमर राग' का क्या आशय है?
(v) 'रव घोर कठोर' किसके लिए कहा गया है?

(सन्ध्या-सुन्दरी)

(ग) अलसता की-सी लता
किन्तु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह,
छाँह सी अम्बर-पथ से चली।
नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप
नूपुरों में भी रुनझुन-रुनझुन नहीं,
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द सा 'चुप, चुप, चुप'
है गूँज रहा सब कहीं—

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) सन्ध्या सुन्दरी किसके कन्धे पर बाँह डालकर छाया के समान आकाश मार्ग से चली?
(iii) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने किसका चित्रण किया है?
(iv) 'अलसता की-सी लता' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(घ) सुलाती उन्हें अंक पर अपने,
दिखलाती फिर विस्मृति के अगणित मीठे सपने,
अर्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,
कवि का बढ़ जाता अनुराग,
विरहाकुल कमनीय कंठ से
आप निकल पड़ता तब एक विहाग।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) कवि का अनुराग कब और क्यों बढ़ जाता है?
(iii) यह पद्यांश किस छन्द में है?
(iv) इस पद्यांश में किस प्रसंग का उल्लेख किया गया है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(ङ) दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सन्ध्या-सुन्दरी परी-सी
धीरे धीरे धीरे।
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,
मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर-
किन्तु जरा गम्भीर, नहीं है उनमें हास-विलास।
हँसता है तो केवल तारा एक
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से
हृदयराज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) सन्ध्या की तुलना किससे की गयी है?
(iv) उपर्युक्त पद्यांश में किस समय का वर्णन किया गया है?
(v) सन्ध्या सुन्दरी किसके समान धीरे-धीरे धरती पर उतर रही है?

(च) व्योम-मंडल में जगती तल में—
सोती शान्त सरोवर पर उस अमल-कमलिनी-दल में—
सौन्दर्य-गर्विता सरिता के अति विस्तृत वक्षःस्थल में—
धीर-वीर-गम्भीर शिखर पर हिमगिरि-अटल-अचल में—
उत्ताल-तरंगाघात-प्रलय-घन-गर्जन-जलधि प्रबल में—
क्षिति में—जल में—नभ में—अनिल-अनल में—
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द सा, 'चुप, चुप, चुप'
है गूँज रहा सब कहीं— **[2019 CN]**

प्रश्न– (i) कवि की दृष्टि में कौन सो रही है?
(ii) "उत्ताल-तरंगाघात-प्रलय-घन-गर्जन-जलधि प्रबल में" का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iv) 'धीर-वीर-गम्भीर शिखर पर' में कौन-सा अलंकार है?
(v) पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अधोलिखित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) विरहाकुल कमनीय कंठ से
आप निकल पड़ता तब एक विहाग।
(ख) तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास।
(ग) थके हुए जीवों को वह सस्नेह प्याला एक पिलाती।
2. "निरालाजी के व्यक्तित्व का निरालापन उनकी काव्य-रचनाओं में पूर्णतः चरितार्थ होता है।" स्वपठित रचनाओं के आधार पर इस कथन का औचित्य सिद्ध कीजिए।
3. "निरालाजी ने हिन्दी कविता में अन्तः और बाह्य दोनों को ही परिवर्तित कर दिया है।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं? सोदाहरण उत्तर दीजिए।
4. "निरालाजी का क्रान्तिकारी व्यक्तित्व उनकी रचना 'बादल-राग' में भली प्रकार प्रकट हुआ है।" इस कथन की सतर्क समीक्षा कीजिए।
5. निराला की 'सन्ध्या-सुन्दरी' रचना के काव्य-सौन्दर्य का निरूपण कीजिए।
6. मुक्तछन्द से आप क्या समझते हैं? निरालाजी की मुक्तछन्द रचनाओं की काव्य-शोभा का विश्लेषण कीजिए।
7. "निरालाजी का व्यक्तित्व जहाँ वज्रादपि कठोर था वहाँ कुसुमादपि कोमल भी।" स्वपठित रचनाओं के आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
8. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जीवन-परिचय दीजिए। **[2016 SF]**

9. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

[2019 CL, CR, 20 ZG]

अथवा

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।

[2016 SD, 17 MD, 19 CM, CQ]

10. निरालाजी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

11. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
12. 'बादल-राग' कविता के कवित्व पर प्रकाश डालिए।
13. निराला की 'सन्ध्या-सुन्दरी' कविता में निहित प्रकृति-सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. निरालाजी की रचनाओं का नामोल्लेख कीजिए।
2. 'बादल-राग' कविता में कवि ने बादल से क्या प्रार्थना की है?
3. निरालाजी की काव्य-भाषा का उल्लेख कीजिए।
4. निराला का व्यक्तित्व कैसा था?

काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (क) राग-अमर! अम्बर में भर निज रोर।
   (ख) अलसता की-सी लता किन्तु कोमलता की वह कली।
2. रूपक एवं वीप्सा अलंकार का लक्षण बताते हुए प्रस्तुत पाठ से एक-एक उदाहरण दीजिए।